भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष 13, अंक-7-8-9 बुधवार, 26 सितं. ' 90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

ब्रह्मप्रवाह

सभी आनंद करो बस आनंद करो.....

क्योंकि,

प्रगट प्रभु मिले हैं।

ऐसे मुक्तों का दिव्य समाज मिला है।

आज से ही आनंद में रहो.....कल आने वाला ही नहीं है।

तो,

भगवत्स्वरूप प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिश्री और सभी संतों के संकल्प से

आप सब को

अखंड वर्तमान में ही जीवन जीने की यह कला में–सदा सुखी रहने की कला में

सम्पूर्ण सफलता मिले यही इस नूतन वर्ष के शुभाशीष हैं।

प.पू. काकाजी महाराज

7 नवं.' 77

✧ ✧ ✧ ✧

आई दीवाली.....अखंड दीवाली

जीवन एक संग्राम है। करोड़ों जन्मों से जीवमात्र जन्म, मरण, प्रारब्ध, प्रकृति के जड़ मायाजाल में जकड़ा हुआ है। बेशक, आज विज्ञान खूब प्रगति कर रहा है, परन्तु भौतिक साधन व सुख सम्पदा जीव को आत्मा की शाश्वत् शांति प्रदान नहीं कर सके। दूसरी ओर सच्चा सुख देने वाले को जीवन अपनी मायिक दृष्टि, बौद्धिक मूल्यांकनों के कारण पहचानने में असमर्थ है। एक उक्ति प्रसिद्ध है। 'आसमान वाला दिखाई नहीं पड़ता व धरती पर प्रगट है उसे माना नहीं जाता।' सो कशमकश के इस गहरे काले अंधकार में भटकता हुआ मानव निरन्तर एक पवित्र शांति की खोज में बेचैन है, जीवन की सही दिशा ढूंढ रहा है.....

- o प्रारब्ध प्रकृति के बंधनों से मुक्त कराने वाले
- o जन्म मरण के रोग से छुटकारा दिलाने वाले
- o गहरे काले अंधकार में से उबार कर हमारी चेतना में सच्ची ज्योति प्रगटाने वाले
- o एक अनोखा शाश्वत् सुख-शांति अनुभव कराने वाले
- o हमें निश्चिंतता, निर्भयता बक्षिश देने वाले

प्रभु के प्रत्यक्ष स्वरूपों ने हम पर अनुग्रह करके जो हमें ग्रहण किया, वही हम सभी के जीवन में 'दीवाली' का आगमन हुआ है। परन्तु अब देह रहते हुए जल्दी से जल्दी अखंड प्रभु की स्मृति में रहकर अक्षरधाम के सुख, शांति, आनंद के अधिकारी बने–वही है 'अखंड दीवाली'.....

आध्यात्मिक दृष्टि से दीवाली मनाने का अर्थ–स्वयं के भीतर ही झाँकना कि मैंने कितना किया? और कितना बाकी है?

नया वर्ष मनाने का अर्थ–कौन सा रास्ता अल्प समय में हमारे लक्ष्य तक पहुंचा सकता है? लक्ष्य क्या? यह सोचकर–भीतर में प्रभु प्रगटाने का दृढ़ निश्चय करके आगे बढ़ना।

भगवान के प्रत्यक्ष स्वरूप में जितनी निष्ठा उतना सुख और जितना सच्चा संबंध उतना परिवर्तन !

आज तो सुवर्ण अवसर है। दुर्लभ में दुर्लभ ऐसे सत्संग का जोग मिला,

प्रत्यक्ष गुणातीत संत मिले,

अरे ! इस रास्ते उंगली पकड़कर चलाने वाले मिले, केवल मौज में–बक्षिश में भव सागर से नाव पार कराने वाले मिले.....

परन्तु मूल प्रकृति व स्वभाव के बादलों के कारण, खूब अनुभव होते हुए भी, गुणातीत स्वरूपों का स्वीकार नहीं कर पाते....वह परम आनंद-सुख भोग नहीं पाते। संत के साथ संबंध दृढ़ करने में कई प्रकार का अव्यक्त देहभाव और जीवभाव बाधारूप बन जाता है। परन्तु बड़े संत के साथ अगर हम दिल की सच्चाई से विश्वासपूर्वक वफादारी रखकर, महिमा से सेवा करने की सुरुचिमात्र भी रखेंगे तो प्रभु हमें हँसते-हँसते देहभाव व जीवभाव से परे कर देंगे। इससे भी अधिक जैसा हमारे प्रभु प.पू. काकाजी बार-बार कहते थे **'नित्य नवीन आश्चर्यों की परंपरा का–दिव्यता का अनुभव होगा।'** हमें लगेगा कि अहो हो ! प्रभु ऐसे ! कितने दयालु ?.....

तो, अब ? पल-पल उन्हें दिव्य व अन्तर्यामी मानकर हम जीना शुरू कर दें। **'अखंड स्मृति व अखंड आनंद'–**यही दो सूत्र हमारा जीवन का आधार बने। सर्व गुणातीत स्वरूपों का व संबंध वालों का नित नया माहात्म्य समझे–लीला का दर्शन करा करें.....जिससे रोज दीवाली–अखंड दीवाली ! ●

शरद्पूर्णिमा.....

शरद्पूर्णिमा.....अपने सम्पूर्ण रूप में खिले चन्द्रमा द्वारा शीतलता की किरणें फैलाती हुई अनोखी रात....अनादि शुद्ध चैतन्य ब्रह्म द्वारा धरती को 'अखंड सुहागिन' सनाथ बनाने की रात... आध्यात्मिक इतिहास में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने इसी पावन दिन धरती पर प्रगट होकर, अखंड आध्यात्मिक शीतलता की बहती सुरसरिता रखकर युगों-युगों के लिए अमर गुणातीतभावना द्वारा इस रात को अमर कर दिया ! मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामी की जयंती की बड़ी से बड़ी भेंट मानवजाति को सदा के लिए बक्षिश यही कि-गुणातीतभाव को पाये संतों व जीवनमुक्तों द्वारा हमारे प्रभु पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहें.....

श्रीजी महाराज स्वयं का धाम और मुक्तों तथा ऐश्वर्यों सहित धरती पर पधारे। महाराज के साथ अगर गुणातीतानंदस्वामी प्रगट न हुए होते–तो विषय के रमणीय राग की निर्मूलता और मूलभूत प्रकृति का दिव्यता में सम्पूर्ण रूपान्तर नहीं हुआ होता, जिससे आत्यंतिक कल्याण होना तो असंभव ही रहता। देहभाव व निरंतर जीवभाव के अज्ञान में फंसा मानव ऐसे परमात्मा-परब्रह्म के स्वरूप को सम्यक् पहचान ही नहीं सकता था क्योंकि व्रत, जप, तप, योग, यज्ञ, दान जैसे स्वयं के साधन से यह अज्ञान टलता नहीं और महाराज जैसे साक्षात् प्रभु का धरती पर अवतरित होने का हेतु कोई समझ ही नहीं पाता.....परन्तु धन्य हो गुरू गुणातीत को–जिन्होंने महाराज को अखंड धारण ही नहीं किये बल्कि महाराज के साथ अद्भुत रसबसता, अटूट एकत्व व निर्विकल्प रूप से अखंड जुड़े रहकर–स्वयं जीकर हरेक के लिये आत्यंतिक मुक्ति का द्वार सदा के लिए खुला कर दिया।

– महाराज का अंतर (हृदय) यानि गुणातीत,
– स्वामी को एक आधार था महाराज का
– महोब्बत थी एक महाराज की ही
– राग था एक महाराज का ही
– रोम-रोम केवल महाराजमय.....

गुणातीतानंदस्वामी स्वयं ही एक ज्वलंत दीपक समान थे। सूर्य का परिचय नहीं कराना पड़ता, लेकिन उसकी रोशनी, तपन हरेक को अनुभव करा देती है कि यह सूर्य है.....हम सभी गुणातीत के वंशज हैं।.....आइये, अपने गुरु के जीवन के एक छोटे प्रसंग को निहारें, जो हमें स्पष्ट दर्शन कराता है कि हमारे गुरु कैसा आदर्श जीवन जीकर गये हैं और हम क्या कर रहे हैं? क्या सचमुच हम उस वंश के कहलाने योग्य हैं?

गुणातीतानंदस्वामी जूनागढ़ मंदिर के महंत थे। महंत होते हुए भी मंदिर की हर छोटी से छोटी क्रिया भी अपने हाथ से स्वयं करते। एक बार स्वामी जूनागढ़ मंदिर के बरामदे में झाड़ू लगा रहे थे। जूनागढ़ के महंत की साधुता, वैराग्य, ज्ञान, प्रतिभा की खूब महिमा सुनकर तरणेतर के महंत गुणातीतानंदस्वामी के दर्शन के लिए आये। बाहर बरामदे में किसी साधु को झाड़ू लगाते देखकर उन्होंने पूछा मंदिर के महंत कहाँ हैं? झाड़ू लगाने वाले साधु (गुणातीतानंदस्वामी) ने उनको अन्दर की ओर जाने का इशारा किया। वे अंदर की ओर जाने के लिये मुड़े....इतने में ही गुणातीतानन्दस्वामी हाथ मुँह, धोकर, भीतर नीचे आसन पर जाकर बैठ गये। तरणेतर के महंत तो आसन पर वही झाड़ू लगाने वाले साधु को बैठे देखकर आश्चर्यचकित हो

गये। उन्होंने पूछा कि क्या आप ही महंत हो? स्वामी ने हाथ जोड़कर कहा–हाँ। तरणेतर के महंत ने पूछा आप महंत होते हुए भी झाड़ू लगा रहे थे? गुणातीतानंदस्वामी ने उत्तर दिया कि **हमारे यहां तो जो सेवा करे वही बड़ा**.....यह सुन तरणेतर के महन्त सन्न हो गये और बोले ''स्वामी ! हमारे यहां तो गद्दी व अच्छे-अच्छे पदार्थों को इकट्ठा करने की लालसा के कारण आपस में मारपीट होती है और इसी कारण अब तक अठारह महंत बदल चुके हैं।'' दासत्व के ऐसे मूर्तस्वरूप गुरु का जीवन ही हमारे लिये एक शिक्षा है न?

शरद्पूर्णिमा के इस महामंगलकारी दिन को और भी अधिक चिरस्मरणीय व चार चांद से सुशोभित किया.....गुणातीत पीढ़ी के वारिसदार गुरुहरि योगीजी महाराज ने..... !

गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी को साक्षात् स्थान गोंडल (मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का समाधि स्थान) में विजया दशमी के दिन पार्षद दीक्षा (श्वेत वस्त्र) दी व दशहरे के पाँचवे दिन शरद्पूर्णिमा पर भागवती दीक्षा दी। योगीजी महाराज ने यह दोनों दिन कोई रहस्य देने के लिये ही चुने होंगे....विजयादशमी अर्थात् वृत्तियों पर विजय करके सुरुचि से दौड़ना व शरद्पूर्णिमा अर्थात् साकार ब्रह्म की महामंगलकारी अमर गुणातीत भावना !

यह घटना विशेष व आश्चर्यकारक इसलिये थी कि गुरुहरि योगीजी महाराज ने बहुत युवकों को साधु की दीक्षा दी, परन्तु प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को दीक्षा देते समय गुरुहरि योगीजी महाराज ने नारियल फोड़ते हुए कहा था–**तुम्हें माया पराभव नहीं कर सकेगी।** इससे भी अधिक गुरुहरि योगीजी महाराज दीक्षा देते समय ऐसा बोले थे कि ''**महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को जैसी दीक्षा दी थी वैसी ही दीक्षा हम आज प्रभुदास भाई (प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पूर्वाश्रम का नाम) को दे रहे हैं।**'' गुरुहरि योगीजी महाराज के द्वारा कहे गये ये शब्द ही प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की महिमा का यथार्थ परिचय-दर्शन हमें कराते हैं।

इस विजयादशमी व शरद्पूर्णिमा के दिन प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को दीक्षा लिये 25 वर्ष पूरे होंगे.....यह दिन हम सभी के लिये खूब मंगलकारी, पवित्र व दिव्य है, क्योंकि हम सब को स्वभाव व प्रकृति के जड़ बन्धनों से मुक्ति दिलाने, 'स्व' का प्रलय कराने गुरुहरि योगीजी महाराज ने 'दशहरा' का दिन चुना और हमारे हृदय में एक प्रभु की मूर्ति बिठाकर नीरव शीतलता प्रदान करने 'शरद्पूर्णिमा' का दिन.....

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का जीवन हम सभी ने देखा है, निहारा है, अनुभव करा है। वे दिन रात, आंधी, तूफान, देह गिने बिना अविरत परिश्रम करके गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वप्न साकार कर रहे हैं। संबंध में आये चैतन्यों को बल देकर, उनका शुद्धिकरण करके, अखंड अक्षरधाम का सुख लेने वाला आत्मबुद्धि व प्रीति युक्त एक भव्य समाज आज देश-विदेश में प.पू. स्वामिजी की निश्रा में तैयार हो रहा है.....तो इस पवित्र दिन पर उनके चरणों में प्रार्थना करें–हे स्वामी ! आपने जैसे सही अर्थ में 'गुणातीत' का वारसा रखा है....अल्प संबंधवालों के पास दास के भी दास बनकर गुणातीत के नाम की ध्वजा को आप चरम सीमा तक ले आये हो.....बस आपकी ओर दृष्टि रहे व चाहे आपकी अनुवृत्ति के मुताबिक हम चल तो नहीं पाते, पर आत्मीयता व सुरुचि से दौड़ने में कभी भी पीछे न हटें–यही इस **दीक्षा रजत जयंती** पर आपके चरणों में आशीष याचना !

***

जन्म-कर्म च मे दिव्यं—

एक दिन पू. महंत स्वामी गोंडल में बर्तन साफ कर रहे थे। गुरुहरि योगीजी महाराज कहीं बाहर जाने तैयार होकर पगड़ी पहनकर निकल ही रहे थे। उन्होंने एक थाली थोड़ी सी चिकनी देखी, तो स्वयं राख लेकर उस थाली को घिसने लगे। किसी को न कुछ कहा, न टोका। गुरुहरि योगीजी महाराज के जीवन में, रोम-रोम में 'सेवा' दिखाई पड़ती थी। युवानी में तो अथाग् परिश्रम करा ही, पर 70 साल की आयु में.....तबियत अच्छी न होते हुए व लाखों के जीवनप्राण होते हुए....सेवा में कभी भी कमी नहीं आने दी।

गुरुहरि योगीजी महाराज कभी युवकों को अपनी दिनचर्या बताते हुए कहते—'मैं सुबह तीन बजे उठ जाता....सारंगपुर में वाड बनाता, रोटी बनाता, बर्तन साफ करता **उसमें ही मुझे आनंद आता,** पर कभी भी यह सब करने से मुझे थकावट नहीं होती थी।

एक भक्त ने बापा की यह बात सुनकर पूछाः 'यह सब करने में आनंद कैसा? बल्कि इसमें तो शरीर को कष्ट पड़ता होगा.....'

बापा ने जवाब दिया : 'गुरु' **मूर्ति का आनंद** आता था ! भगवान के भक्तों की सेवा-संभाल में ही भगवान की मूर्ति है—वह करने से आनंद आता है। **भगवान का सुख भक्तों की सेवा में ही मिलता है, अपना, देहाभिमान पोसने (देह का लालन-पालन) में नहीं।'**

गुरुहरि योगीजी महाराज कैसा सहज अद्भुत जीवन जिये....स्वयं अनंत ब्राह्मण्डों के अधिपति होते हुए भी ! सच्चा गुरु स्वयं अपने वर्तन द्वारा, अपनी देह पर कष्ट लेकर शिष्यों के लिये आदर्श रखता है। और हममें दो पैसे की बरकत भी न हो, फिर भी स्वयं को खूब समझदार मानकर, ऐसी सेवा करने वालों की नामसूची में अपना नाम लिखवाने उतावले बने रहते हैं। हम सभी विचारें कि हमारे गुरु सेवकभाव, विनम्रता के मूर्तस्वरूप और हम? इससे भी अधिक हम तो थोड़ी सी और वह भी मनमुखी सेवा करें तब भी यही चाहना रहेगी कि आसपास वाले जरा हमें देखें.....हमें सर्टिफिकेट दें कि अहो हो ! इसने तो कितनी सेवा की है ! पर हमें ख्याल नहीं कि मान पाने की भावना से करी सेवा प्रभु तक पहुँचती ही नहीं, उस सेवा को बीच में ही हमारा 'मान' रूपी राक्षस खा लेता है। सो उस सेवा का हमें फल नहीं मिलता। 'सेवा' केवल अपने गुरु-प्रभु को ही राजी करने की एकमात्र भावना से—भगवान की बुद्धि से करनी चाहिए।

* * * *

स्वामी की बातें

146. .....जितना साधु में जीव बंधा है, उतना ही सत्संग है और जितना जीव बंधा नहीं है उतना कुसंग है..... प्र-3,42

147. .....महाराज बोले.....पुरुष का मन स्त्री के गुह्य अंग में व स्त्री का मन पुरुष के गुह्य अंग में रहता है। यूँ सभी के मन दिखा दिये। प्र-3,47

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	29.9.90	शनिवार	विजयादशमी, दशहरा
2.	दि.	30.9.90	रविवार	एकादशी, व्रत
3.	दि.	3.10.90	बुधवार	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्यदिन
4.	दि.	14.10.90	रविवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	16.10.90	मंगलवार	धनतेरस
6.	दि.	18.10.90	गुरुवार	दीपावली, लक्ष्मी पूजन
7.	दि.	19.10.90	शुक्रवार	गोवर्धन पूजा, अशोकविहार मंदिर में अन्नकूट, नतून वर्ष प्रारंभ
8.	दि.	20.10.90	शनिवार	भैयादूज
9.	दि.	23.10.90	मंगलवार	लाभ पंचमी

निमन्त्रण.....

हमारे नवनिर्माणाधीन मंदिर के हॉल में

दिनांक 19 अक्तू. '90, शुक्रवार, सुबह 11.30 बजे

वार्षिक महाभोग लगा कर

सत्संगी बंधु **मा. श्री एच.के.एल.भगत साहेब के**

करकमलों से अन्नकूट आरती का मंगल प्रारंभ होगा.....

इस महामंगलमय अवसर पर सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित

उपस्थित रहने का आपको हार्दिक आमन्त्रण है।

स्थान : योगी डिवाईन सोसाईटी, अशोकविहार-**III,**

स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन, दिल्ली-110 052

✪✪✪✪

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A-103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032